ज्योतिष एवं कुण्डली विज्ञान पाठ्यक्रम

(One Year Diploma Course in Jyotish & Kundli Vigyan)

ऑनलाइन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

समन्वयक

प्रो. अमित कुमार शुक्ल

अध्यक्ष - ज्योतिषविभाग

सह-समन्वयक

डॉ. मधुसूदन मिश्र

सहायक आचार्य – ज्योतिषविभाग

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

ज्योतिष एवं कुण्डली विज्ञान पाठ्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1– ज्योतिष शास्त्र के प्रति जन जागरूकता उत्पन्न करना।

2– ज्योतिष शास्त्र के व्यावहारिक पक्षों से जन सामान्य को लाभान्वित करना।

3– ज्योतिष शास्त्र के प्रति विद्यमान भ्रामक अवधारणाओं को दूर करना।

4– ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक पक्षों को भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरूप विश्व पटल पर स्थापित करना।

पाठ्यक्रम संरचना

ज्योतिष एवं कुण्डली विज्ञान विषय के अन्तर्गत –

1– त्रैमासिक, षाण्मासिक एवं वार्षिक पाठ्यक्रम संचालित होंगे।

2– त्रैमासिक एवं षाण्मासिक प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम होंगे।

3– वार्षिक पाठ्यक्रम डिप्लोमा पाठयक्रम होगा।

4– त्रैमासिक, षाण्मासिक एवं वार्षिक पाठ्यक्रम में क्रमशः कुल 45, 90 एवं 180 कालांश होंगे।

5– पाठ्यक्रम में कालांश की अवधि एक घंटे की होगी।

6– सप्ताह में पांच कार्यदिवसों में सांयकाल निर्धारित समयानुसार कक्षायें ऑनलाइन संचालित होंगी।

।। वार्षिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम।।

(One Year Diploma Course)

(ज्योतिषशास्त्र का परिचय)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
ज्योतिष शास्त्र का परिचय	➢ ज्योतिष शास्त्र का परिचय ➢ ज्योतिष शास्त्र के भेद (सिद्धान्त, संहिता, होरा,वास्तु, रमल, प्रश्न, शकुन, ताजिकादि का परिचय)	03
ज्योतिषशास्त्र के प्रमुख आचार्यों का परिचय	➢ ज्योतिषशास्त्र का विकासक्रम । ➢ आर्यभट्,वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, श्रीपति, भास्कर, कमलाकर,सामन्तचन्द्र शेखर आदि का परिचय ।	02
ज्योतिषशास्त्रीय प्रमुख कृतियां	➢ सूर्यसिद्धान्त,पंचसिद्धान्तिका,बृहत्संहिता,सिद्धान्त शिरोमणि,बृहज्जातक आदि ग्रन्थो का परिचय ।	01

(पंचांग एवं कालमान परिचय)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
पंचांग परिचय	➢ पंचांग परिचय – तिथि, वार,नक्षत्र, योग,करण, अयन, गोल, पक्ष,ऋतु, मासादि का परिचय ।	05
पंचांग अवलोकन	➢ पंचांग देखने की विधि	01
कालमान विचार	➢ नवविध कालमान– ब्राह्म,दिव्य, गौरव,प्राजापत्य, सौर,नाक्षत्र आदि कालमानों का परिचय । ➢ शक संवत् विचार ।	05

(कुण्डली निर्माण विधि)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
कुण्डली निर्माण विधि	➢ जन्म समय शोधन ➢ सूर्योदय एवं सूर्यास्त साधन ➢ इष्टकाल ज्ञान ➢ भयात– भभोग साधन	05

कुण्डली निर्माण विधि	➢ स्पष्ट चन्द्र साधन ➢ ग्रह स्पष्टीकरण	03
कुण्डली निर्माण विधि	➢ पलभा एवं चरखंड ज्ञान ➢ स्वदेशोदय साधन	02
कुण्डली निर्माण विधि	➢ लग्नसाधन	04
कुण्डली निर्माण विधि	➢ दशमलग्न साधन	03
कुण्डली निर्माण विधि	➢ द्वादश भाव साधन	02
कुण्डली निर्माण विधि	➢ दशवर्गसाधन ➢ लग्न ➢ होरा ➢ द्रेष्काण ➢ चतुर्थांश ➢ सप्तमांश ➢ नवांश ➢ दशमांश ➢ द्वादशांश ➢ त्रिंशांश ➢ षष्ठ्यशं	10
कुण्डली निर्माण विधि	➢ विंशोत्तरी महादशा ➢ अन्तर्दशा ➢ अष्टोत्तरी दशा ➢ योगिनी दशा	04

(राशि एवं ग्रह परिचय)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
राशि परिचय	➢ राशि स्वरूप ➢ राशि स्वामी ➢ राशि स्वभाव ➢ राशि वर्ण ➢ राशि स्थान ➢ कालपुरूष विवेचन	03
ग्रह परिचय	➢ ग्रह स्वरूप ➢ उच्च नीच विचार ➢ मूलत्रिकोण ➢ आत्मादि विचार	04
ग्रह बल विचार	➢ षड्बलविचार	04

(कुण्डली का सामान्य परिचय)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
कुण्डली का सामान्य परिचय	➢ कुण्डली का सामान्य परिचय ➢ द्वादश भाव विचार ➢ भावकारक ग्रह विचार ➢ भावों की केन्द्रादि संज्ञा विचार,	03

	➢ विविध भावों से विचारणीय विषय ➢ ग्रहों से विचारणीय विषय	

(फलादेश के प्रमुख सिद्धान्त का परिचय)

प्रमुख सिद्धान्त	➢ ताजिक ➢ गोचर ➢ प्रश्न ➢ रमल ➢ जैमिनी ➢ पारशर	06

(द्वादश भाव के शुभाशुभ फल का विशेष परिचय)

द्वादश भाव विचार	➢ प्रथम भाव विचार ➢ द्वितीय भाव विचार ➢ तृतीय भाव विचार ➢ चतुर्थ भाव विचार ➢ पंचम भाव विचार ➢ षष्ठ भाव विचार ➢ सप्तम भाव विचार ➢ अष्टम भाव विचार ➢ नवम भाव विचार ➢ दशम भाव विचार ➢ एकादश भाव विचार	12

	➢ द्वादश भाव विचार	

(विशेष समसामयिक विषयों का विचार)

समसामयिक विचार	➢ आयुर्दाय विचार ➢ मारकेश विचार ➢ रोग विचार ➢ अरिष्ट विचार ➢ विद्या विचार ➢ आजीविका विचार ➢ विवाह विचार ➢ संतति विचार ➢ गृह प्राप्ति विचार ➢ भाग्य विचार ➢ वाहन सुख विचार	12
विविध योग	➢ विविध राजयोग विचार ➢ बालारिष्ट योग ➢ गजकेसरी योग ➢ नाभस योग ➢ अनफादि योग ➢ वेशि–आदि योग ➢ षट्क्लीब योग ➢ वैधव्य योग	12
	➢ विविध भंग योग	04

(शुभाशुभ फल निरूपण की अन्य पद्धतियां)

गोचर विचार	➢ गोचर फल निरूपण	04
प्रश्न विचार	➢ विविध प्रश्नों का प्रश्न विधि से फल ज्ञान	04
अंग लक्षण विचार	➢ अंगो के लक्षणो के माध्यम से शुभाशुभ फल विचार	04
हस्तरेखा विचार	➢ हस्तरेखा द्वारा आयु, विद्या,स्वास्थ्य, विवाह आदि का विचार	04
स्वप्न विचार	➢ स्वप्न के द्वारा शुभाशुभ फल विचार	02
शकुन विचार	➢ शुभ एवं अशुभ शकुन के द्वारा शुभाशुभ फल विचार	02
अंक ज्योतिष	➢ अंक ज्योतिष के माध्यम से शुभाशुभ विचार	02
स्त्री जातक विचार	➢ स्त्री जातक हेतु विशेष विचार	02
(परिहार विचार)	➢ ग्रहदोष शांति विचार ➢ रत्न विचार ➢ विविध धर्मशास्त्रीय परिहार ➢ विविध वैदिक उपचार	04

(मुहूर्त्त परिचय)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
नक्षत्र विचार	➢ नक्षत्र स्वरूप ➢ नक्षत्र स्वामी	

	➢ नक्षत्रों का वर्गीकरण (ध्रुव,मृदु,क्षिप्रादि का परिचय)	04
विविध मुहूर्त्त विचार	➢ मृत तिथिविचार ➢ सर्वार्थसिद्धियोग विचार ➢ वर्ज्य पंचांग दोष ➢ भद्रा विचार ➢ पंचक विचार ➢ मृत्युयोग विचार ➢ शून्य मास विचार	04
मुहूर्त्त घटक विचार	➢ गुरू, शुक्र अस्तादि विचार, ➢ सिंहस्थ गुरू विचार ➢ होलाष्टक विचार ➢ लग्नशुद्धि विचार	02
विविध व्यावहारिक मुहूर्त्त	➢ क्रय–विक्रय ➢ यात्रा ➢ वाहन क्रय ➢ गृहारंभ ➢ गृहप्रवेश ➢ नामकरण ➢ अन्नप्राशन ➢ विद्यारम्भ ➢ चूडाकरण ➢ यज्ञोपवीत ➢ द्विरागमन	06

आचार्य प्रणीत मूल ग्रन्थ के सन्दर्भित अंशों का पंक्तिशः अध्ययन	➢ अवकहडाचक्रम् ➢ लघुजातकम्	10

(विवाह मुहूर्त्त एवं मेलापक परिचय)

शीर्षक	पाठ्य विषयवस्तु	कालांश (घंटों में)
विवाह मुहूर्त्त विचार	➢ कन्या एवं वर वरण मुहूर्त्त ➢ विवाह काल निर्धारण ➢ विवाह में ग्रहशुद्धि विचार ➢ विवाह मुहूर्त्त विचार	03
विवाह मेलापक	➢ अष्टकूट ➢ वर्ण ➢ वश्य ➢ तारा ➢ योनि ➢ ग्रहमैत्री ➢ गणमैत्री ➢ भकूट ➢ नाडी	07
विशेष विचार	➢ पंचशलाका विचार ➢ सप्तशलाका विचार ➢ विवाह में विविध दोष विचार एवं परिहार।	05

मंगलिक विचार	➢ भौमदोष विचार ➢ भौमदोष परिहार विचार	01

सहायक एवं सन्दर्भ ग्रन्थ –

1.मुहूर्त्तचिंतामणि

2.भारतीय ज्योतिष

3.भारतीय कुंडली विज्ञान

4.लघुजातकम्

5.जातकालंकार

6.जातकपारिजात

7.ताजिकनीलकंठी

8.षट्पंचाशिका

9.जातकतत्वम्

10 अवकहडाचक्रम्